India's Human Space Programme

Indian Space Research Organisation (ISRO), a major arm of the Department of Space (DoS), Government of India, has spent over five decades advancing space technology for national development and global collaboration. India's space journey began in 1962 under Vikram A. Sarabhai with the formation of INCOSPAR, later evolving into ISRO in 1969. Since then, ISRO has developed reliable launch vehicles such as PSLV, GSLV, LVM-3, and SSLV, while also designing satellites for communication, broadcasting, meteorology, navigation, disaster management, and resource monitoring in partnership with academia and industry.

ISRO has also built a strong global presence through international collaborations and commercial launch services via NewSpace India Limited. Notable milestones include missions like Chandrayaan-3, Aditya-L1, and the joint mission of ISRO-NASA i.e., NISAR. Looking ahead, ISRO is preparing for its first human spaceflight program, Gaganyaan, along with ambitious future projects such as a Venus orbiter, Chandrayaan-4 and 5, and the development of an indigenous space station, reinforcing its role as a key player in the global space sector.

One of the Souvenir Sheet depicts India's advancing space capabilities against Earth, symbolizing a unified future vision. At its center, the Gaganyaan crew module reflects India's human spaceflight capabilities, while the Bharatiya Antariksh Station signifies India's transition into an elite, indigenous space-faring power, aiming to establish a functional, modular space station in Low Earth Orbit by 2035. The Chandrayaan-3 lander and rover highlight successful lunar exploration. Complementing these is the Human Rated Launch Vehicle (HRLV), designed to carry 2–3 astronauts to 300–400 km orbit. Together, they showcase India's journey from lunar missions to human spaceflight and future orbital infrastructure.

India has also achieved a historic milestone with Group Captain Shubhanshu Shukla becoming the first Indian astronaut to visit the International Space Station through the Axiom-04 mission. The Axiom-04 mission has successfully concluded with the return of ISRO Gaganyatri Shubhanshu Shukla, marking a proud moment both for ISRO and India as he returned after a historic 18-day scientific mission aboard the International Space Station (ISS).

The Axiom-04 mission patch worn by Group Captain Subhanshu Shukla has been used in the second Souvenir Sheet design which presents a cohesive narrative of India's space journey. The patch weaves together symbols that reflect India's journey from ancient knowledge to modern space exploration. At its center is the Earth, representing shared origins, alongside an astronaut gazing toward the stars, symbolizing human curiosity. The Gaganyaan capsule highlights India's human spaceflight ambitions, while the Sun above signifies life and energy in Indian culture, surrounded by astronomical motifs honoring early cosmic understanding. Tessellated lines connect past, present, and future, emphasizing continuity, and mathematical symbols underscore the importance of science and logic. The Moon's phases celebrate India's lunar achievements, while the Aryabhatta satellite marks the nation's first step into space and its 50-year milestone. The Jantar Mantar of Jaipur reflects centuries-old astronomical heritage, and the central infinity symbol represents endless exploration and learning. The entire patch takes the shape of a stamp, signifying India's new and permanent address in space — a bold declaration that our journey among the stars has truly begun.

The Department of Posts is pleased to issue two Souvenir Sheets on India's Human Space Programme, and celebrates India's transition from a participant to a leader in space technology and exploration.

Credits:

1) Design of Stamp, Souvenir Sheet, FDC, Brochure, Cancellation Cachet- Sh. Suresh Kumar
2) Images and text - ISRO (Indian Space Research Organization) and Group captain Shubhanshu Shukla.
3) Patch Design- Sh. Manish Tripathi



भारत का मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम

भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग (डीओएस) की प्रमुख शाखा 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) पांच दशकों से भी अधिक समय से राष्ट्र के विकास और वैश्विक सहयोग के निमित्त अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। भारत की अंतरिक्ष यात्रा वर्ष 1962 में विक्रम ए. साराभाई के नेतृत्व में 'इन्कोस्पार' के गठन के साथ शुरू हुई। तत्पश्चात, वर्ष 1969 में 'इसरो' की स्थापना हुई। तब से, इसरो ने पीएसएलवी, जीएसएलवी, एलवीएम–3 और एसएसएलवी जैसे विश्वसनीय प्रक्षेपण यान विकसित किए हैं, साथ ही शिक्षाविदों और उद्योग जगत के साथ मिलकर संचार, प्रसारण, मौसम विज्ञान, नेविगेशन, आपदा प्रबंधन और संसाधनों की मॉनीटरिंग के लिए उपग्रह डिजाइन करने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया है।

इसरो ने 'न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड' के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय सहयोग और वाणिज्यिक प्रक्षेपण सेवाओं के जरिए वैश्विक स्तर पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है। चंद्रयान–3, आदित्य–एल1 और इसरो तथा नासा के संयुक्त मिशन यानी 'निसार' जैसे अभियान इसकी प्रमुख उपलब्धियों में शामिल हैं। भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, इसरो अपने पहले मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम 'गगनयान' की तैयारी कर रहा है, साथ ही वीनस ऑर्बिटर, चंद्रयान –4 व 5 जैसी महत्वाकांक्षी और भविष्योन्मुखी परियोजनाओं तथा स्वदेशी अंतरिक्ष स्टेशन विकसित करने पर भी काम कर रहा है। इस प्रकार, इसरो वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में एक प्रमुख भागीदार के रूप में अपनी भूमिका को निरंतर सुदृढ़ कर रहा है।

इनमें से एक सोविनियर शीट भारत की बढ़ती अंतरिक्ष क्षमताओं को दर्शाती है और साझे भविष्य को प्रतिबिंबित करती है। इसके केंद्र में अंकित, 'गगनयान क्रू मॉड्यूल' भारत की मानव अंतरिक्ष अभियान संबंधी क्षमताओं को दर्शाता है, जबकि 'भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन' भारत के ऐसे अग्रणी, आत्मनिर्भर अंतरिक्ष–अन्वेषी शक्ति के रूप में उभरने का प्रतीक है, जिसका लक्ष्य वर्ष 2035 तक लो–अर्थ ऑर्बिट में एक कार्यशील, मॉड्यूलर अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना है। चंद्रयान–3 लैंडर और रोवर, सफल चंद्र अभियान को रेखांकित करता है। इनके पूरक के रूप में ह्यूमन रेटेड लॉन्च व्हीकल (एचआरएलवी) अंकित है, जिसे 2–3 अंतरिक्ष यात्रियों को 300–400 कि.मी. ऑर्बिट में ले जाने हेतु डिजाइन किया गया है। कुल मिलाकर ये सब, चंद्र मिशन से लेकर मानव अंतरिक्ष संबंधी अभियान और भविष्योन्मुखी ऑर्बिटल अवसंरचना तक की भारत की गौरवमयी यात्रा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला के एक्सिओम–04 मिशन के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन का दौरा करने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री बनने के साथ ही भारत ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। इसरो के गगनयात्री शुभांशु शुक्ला द्वारा अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर ऐतिहासिक 18 दिवसीय वैज्ञानिक मिशन पूरा करने के बाद उनकी सकुशल वापसी के साथ ही एक्सिओम–04 मिशन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह इसरो और भारत दोनों के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण क्षण था।

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला द्वारा पहने गए एक्सिओम – 04 मिशन के पैच का उपयोग दूसरी सोवेनियर शीट के डिजाइन में किया गया है, जो भारत की अंतरिक्ष यात्रा का एक सुसंगत वृत्तांत प्रस्तुत करता है। यह पैच प्राचीन ज्ञान से लेकर आधुनिक अंतरिक्ष अन्वेषण तक की भारत की यात्रा को दर्शाने वाले प्रतीकों का संयुक्त प्रतिबिंब है। इसके केंद्र में पृथ्वी है, जो साझा उत्पत्ति के विचार का प्रतिनिधित्व करती है, साथ ही सितारों को निहारता अंतरिक्ष यात्री मानव जिज्ञासा का प्रतीक है। गगनयान कैप्सूल भारत के मानव अंतरिक्ष अभियान संबंधी महत्वाकांक्षाओं पर प्रकाश डालता है, जबकि ऊपर अंकित सूर्य भारतीय संस्कृति में जीवन और ऊर्जा का प्रतीक है। इसके इर्दगिर्द खगोलीय आकृतियां अंकित की गई हैं जो प्रारंभिक ब्रह्मांडीय ज्ञान के सम्मान की प्रतीक हैं। टेसेलेटेड रेखाएं अतीत, वर्तमान और भविष्य को जोड़ती हुई, निरंतरता पर जोर देती हैं; तथा गणितीय प्रतीक विज्ञान और तर्क के महत्व को रेखांकित करते हैं। भारत के चांद पर पहुंचने संबंधी उपलब्धियों के प्रतीक के रूप में चंद्र कलाएं दर्शाई गई हैं, जबकि 'आर्यभट्ट उपग्रह' अंतरिक्ष में देश के पहले कदम और इसके 50 साल पूरे होने की उपलब्धि का प्रतीक है। जयपुर का जंतर–मंतर सदियों पुरानी खगोलीय विरासत को दर्शाता है, तथा केंद्र की ओर अग्रसर 'अनंत' चिह्न अंतहीन अन्वेषण और अधिगम का प्रतिनिधित्व करता है। कुल मिलाकर, एक स्टांप के रूप में यह पूरा पैच अंतरिक्ष में भारत की नवीन और स्थायी उपस्थिति को दर्शाता है तथा यह साहसिक घोषणा करता है कि हम सितारों के बीच अपनी यात्रा शुरू कर चुके हैं।

डाक विभाग, भारत के मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम पर सोविनियर शीट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह महत्वाकांक्षी यात्रा, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और अन्वेषण के क्षेत्र में भागीदार से नेतृत्वकर्ता के रूप में भारत के अभ्युदय का प्रतीक है।

आभार:

1) डाक–टिकट, सोविनियर शीट्स, प्रथम दिवस आवरण, विवरणिका, विरूपण कैशे का डिज़ाइन– श्री सुरेश कुमार
2) चित्र और पाठ – इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) और ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला
3) पैच डिजाइन – श्री मनीष त्रिपाठी

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

डाक टिकट मूल्य वर्ग	: 2000 पैसे, 2000 पैसे
Stamp Denomination	: 2000p, 2000p
मुद्रित सोविनियर शीट्स मूल्य	: 2000 पैसे
Souvenir Sheets Denomination	: 2000 p
मुद्रित सोविनियर शीट्स	: 111000 (2)
Souvenir Sheets Printed	: 111000 (2)
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00